1

मधुबनी कला

अभी तक आपने विभिन्न लोककलाओं के बारे में पढ़ा है। इस पाठ में हम बिहार की लोककला मधुबनी के बारे में पढ़ेगे। मधुबनी कला मिथिला की एक चित्रकला शैली है, जो नेपाल और बिहार के क्षेत्र में बनाई जाती है। इस चित्रकला में मिथिलांचल की संस्कृति को दिखाया जाता है।

मधुबनी चित्रकारी को मिथिला की कला भी कहा जाता है क्योंकि यह बिहार के मिथिला प्रदेश में पनपी थी। इस चित्रकारी की विशेषता है चटकीले और विषम रंगों से भरे गए रेखाचित्र और आकृतियां। दरअसल मधुबनी कला का जन्म कोहबर से हुआ है। कोहबर का चित्रण वर-वधू के कमरे को सजाने के लिए और उसमें पूजा करने के लिए दीवार में चित्रित किया जाता है। कोहबर बिहार, झारखण्ड और उत्तर प्रदेश में भित्ति चित्र परंपरा का सबसे पुराना उदाहरण है। यह विवाह के बाद औरतों द्वारा बनाया जाता है। विवाह हिन्दू धर्म का महत्वपूर्ण संस्कार है। कोहबर का शाब्दिक अर्थ है कोह-गुफा या कमरा, वर या दूल्हा का निवास। अत: इस शब्द का अर्थ है- वह कमरा जहाँ नव वर-वधू पहली बार रहते हैं। अर्थात् नवविवाहित जोड़े का कमरा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने एवं अभ्यास करने के उपरांत आप :

- मधुबनी चित्रकला की परंपरा की पहचान कर सकेंगे;
- मधुबनी चित्रकला की उत्पत्ति के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- मधुबनी कला की लोकप्रिय शैलियों के बारे में उल्लेख कर सकेंगे;
- मधुबनी कला चित्रों में प्रयुक्त चित्रण सामग्री के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- मधुबनी कला के वर्तमान परिदृश्य के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- मधुबनी कला के कुछ रोचक तथ्यों के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- मधुबनी चित्रों में चित्रांकित विभिन्न अभिप्रायों को सूचीबद्ध कर सकेंगे।

टिप्पणियाँ

1.1 सामान्य परिचय

आरम्भ में हमें मधुबनी चित्रों के सामान्य परिचय के विषय में जानना आवश्यक है। कोहबर कमरे की सजावट के लिए या इसके महत्व को दर्शाती हुई कई आकृतियां या चित्र बनाये जाते हैं। ये हमारे संस्कारों का परिचय देती हैं। इस चित्र में राम-सीता का विवाह या वर वधू का चित्रण होता है। प्रतीकात्मक चित्र द्वारा हमारी धार्मिक और सामाजिक परम्परा को दर्शाया जाता है। इसमें गौरी पूजा, सूर्य व चन्द्रमा साक्षी रूप में चित्रित किये जाते हैं। बताया जाता है यह शहर रामायण के समय में भी था तब इसका नाम मधु के वन पर पड़ा था। इसलिये इसे मधुबनी चित्रकला के नाम से जाना जाता है। इस कारण प्राकृतिक चित्रों पर विशेष ध्यान दिया गया है उनका महत्व भी प्रतीकात्मक चित्र के द्वारा दर्शाया जाता है। जैसे- सूर्य, चन्द्रमा, मोर, मछली, बांस के पेड़, कछुआ, हाथी, हरे पेड़ आदि। धार्मिक परम्परा को निभाते हुए हिन्दू देवी-देवताओं के चित्र बनाये जाते हैं। जैसे गणेश, कृष्ण-राधा, राम-सीता, माँ गौरी, कुल देवता आदि का चित्रण होता है। मधुबनी चित्रकारी पारम्परिक रूप से यहाँ की महिला ही करती हैं, लेकिन अब इसकी बढ़ती माँग को देखते हुए पुरुष भी इस कला से जुड़ गये हैं। ये चित्र अपने आदिवासी रूप चटकीले और मटियाले रंगों के प्रयोग के कारण लोकप्रिय है। इसकी चित्रकारी दीवारों में गोबर की या कच्ची मिट्टी की ताजी पुताई पर की जाती है। रंगने के लिए प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के रूप में काला रंग काजल और गोबर के मिश्रण से तैयार किया जाता है। इसी प्रकार पीला रंग हल्दी या फूलों के पराग से या फिर नीबू और बरगद के पेड़ के दूध से बनाया जाता है। लाल रंग कुसुम के फूल के रस से या लाल चन्दन से बनाया जाता है। हरा रंग वृक्ष की पत्तियों से, सफेद रंग चावल के चूर्ण से तथा पलाश के फूल से बसंती रंग। इस तरह रंगों का चयन करके चित्र को सजाया जाता है। एक जैसे सपाट रंग लगाये जाते हैं शेड नहीं डाला जाता, न ही कोई खाली स्थान छोड़ा जाता है। आजकल धन प्राप्ति के लिये इस चित्रण कार्य को कागज, कपड़े और कैनवास पर किया जा रहा है। रंगों के लिये भी एक्रेलीक पोस्टर रंग का प्रयोग करते हैं। यह हस्तकौशल एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को सौंपती आयी है। इसलिये इनके पारम्परिक डिजाइनों और नमूनों को पूरी तरह सुरक्षित रखा जाता है। कृषि के अलावा ये आमदनी का एक अन्य साधन बनाए रखने के लिए अखिल भारतीय शिल्पकला बोर्ड और भारत सरकार महिलाओं को हाथ से बने कागज पर अपनी पारम्परिक चित्रकारी करके उसे बाजार में बेचने के लिए प्रोत्साहित करता है। मधुबनी चित्रकारी अनेक परिवारों की आमदनी का एक मुख्य साधन बन गया है। विश्व बाजार में इस कला की माँग को देखते हुए मिथिला की महिलाओं की इस कला परम्परा की सराहना करनी चाहिए।

1.2 पारम्परिक मधुबनी अभिप्राय (मोटिफ)

1. सूर्य : मधुबनी डिजाइन में अधिकतर सूर्य और चन्द्रमा का चित्रण किया जाता है। इन्हें दिव्य निकाय के प्रतीक रूप में प्रयोग किया जाता है।

2. कछुआ : मधुबनी पेटिंग में कछुए अभिप्राय का प्रयोग किया जाता है। दरअसल यह समृद्धि और प्रजनन के प्रतीक के रूप में दर्शाया जाता है।

3. गणेश : यह अभिप्राय धार्मिक और पौराणिक घटनाओं के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा और भी देवी-देवताओं का प्रयोग होता है।

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

चित्र 1.1: मधुबनी अभिप्राय/मोटिफ

4. बांस का पेड़ : पेड़ जीवन और उत्साह का प्रतीक है। बांस को शुभ माना जाता है।

5. मछली : मछली का प्रयोग मधुबनी पेंटिग में अनिवार्य रूप से पाया जाता है। यह समृद्धि और प्रजनन का प्रतीक मानी जाती है।

6. हाथी : मधुबनी कला में हाथी का प्रयोग स्थानीय जीव के रूप में किया जाता है।

7. स्त्री : स्त्री अभिप्राय का प्रयोग कई जगह किया जाता है। जैसे- विवाह समारोह अथवा सामुदायिक गतिविधियों में ग्रामीण जीवन को दर्शाने में प्रयोग किया जाता है।

8. कमल : कमल अभिप्राय का प्रयोग मधुबनी चित्रकला में कई जगह किया जाता हैं, जैसे धार्मिक समारोह में, विवाह में, वन में अथवा शाही बागान में। कमल एक महत्वपूर्ण प्रतीक माना गया है।

9. कलश : विवाह समारोह के दौरान धार्मिक गतिविधियों में कलश का प्रयोग अनिवार्य रूप से होता है।

10. मोर : मोर पक्षी का प्रयोग कई जगह किया जाता है, जैसे- राधा-कृष्ण रास लीला में, राम वन गमन, शाही स्थलों को दर्शाने में अथवा विवाह समारोह के दौरान धार्मिक गतिविधियों में। मोर अभिप्राय का प्रयोग वनस्पति और जीव-चित्रण में महत्वपूर्ण अंग है।

1.3 मधुबनी चित्र बनाने हेतु आवश्यक सामग्री

- कपड़ा या मोटी ड्राइंग शीट/हैंड मेड शीट/हाथ से बना कागज
- पेंसिल
- रबड़
- काला मार्कर
- फाइन-टिप राउंड ब्रुश (आकार 0, 1 और 8 तथा अन्य)
- स्केल
- कार्बन शीट
- फैब्रिक कलर (कपड़े के लिए रंग)
- पोस्टर कलर (पेपर के लिए रंग)
- ट्रेसिंग पेपर

टिप्पणी : परंपरागत रूप से मधुबनी पेंटिंग्स उंगलियों, टहनियों, ब्रुश, निब-पेन और माचिस की तीली के द्वारा बनायी जाती है।

1.4 पारम्परिक विधियां

चरण 1: बॉर्डर

बॉर्डर मधुबनी चित्रकला का महत्वपूर्ण पहलू है और यह चित्रकला को पूरा करता है। निरंतर ज्यामितीय डिजाइन या प्रकृति प्रेरित रूपों का उपयोग किया जा सकता है। सीमा 1/2 इंच से 2 इंच चौड़ी हो सकती है। जितना बड़ा कैनवास उतना ही बड़ा बॉर्डर। यहाँ हम 1/2 इंच का बॉर्डर खींचेंगे।

सबसे पहले फ्री हैंड से सामान के अर्ध मंडल बनाएं और इस अर्धमंडल में दोहरी रेखाएं (डबल लाइन्स) जोड़ें। इसी तरह का पैटर्न अंदर की बाउंड्री के लिये खीचें। डबल लाइन के साथ गोले जोड़ें। अंततः रेखा और गोले के बीच की जगह भर दें।

चरण 2: लेआउट

पेटिंग के लेआउट की संकल्पना करें। पहले मुख्य चरित्र को स्केच करें। इसके बाद शेष स्थान को सार पैटर्न से भरे। सार पैटर्न में आप वनस्पतियों, जैसे- पेड़ और जीवों जैसे- मछली, मोर, हिरन इत्यादि का प्रयोग कर सकते हैं। सार पैटर्न को मुख्य विषय का समर्थन करना चाहिए।

चरण 3: पैटर्न्स

विवरण के लिए पैटर्न्स को दोहराएं। इसका कोई निश्चित नियम नहीं है। आप किसी भी पैटर्न का प्रयोग कर सकते हैं। यह पैटर्न प्रमुख विषय के साथ अच्छी तरह से मिश्रित होना चाहिए। बॉर्डर में भी विवरण के लिए पैटर्न्स का प्रयोग किया जा सकता है। इस बात का ध्यान रखें कि मिथिला पेटिंग में मुख्य विषय के चारों ओर कोई जगह नहीं छोड़ी जाती है।

चरण 4: पृष्ठभूमि का रंग

रंग भरते समय सर्वप्रथम पृष्ठभूमि के रंग का निर्णय कर लें। पृष्ठभूमि का रंग मुख्य विषय के अनुरूप होना चाहिए।

चरण 5: अग्रभूमि का रंग

पृष्ठभूमि में रंग करने के बाद, अग्रभूमि में चटकीले रंग भरें। रंगों का चयन बहुत महत्वपूर्ण है। अगर संदेह हो तो स्पष्ट रंगों का प्रयोग करें। जैसे कि पेड़ के तने को भूरा, पत्तियों को हरा, मोर को नीला इत्यादि। रंग संयोजन के बारे में अधिक जानकारी के लिये खुद को रंग पहिया (Color wheel) से परिचित कराएं।

चरण 6: पृष्ठभूमि के पैटर्न्स

यह चरण ऐच्छिक है। आप पृष्ठभूमि को एकल रंग से भर सकते हैं। लेकिन पैटर्न मधुबनी कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पृष्ठभूमि को और रोचक बनाने के लिये गोल ब्रुश के साथ काले रंग से पैटर्न को दोहराएं।

चित्रण हेतु पृष्ठभूमि तैयार करना

प्राचीन काल में, मिथिला में चित्रों को फर्श और दीवार पर बनाया जाता था। इन दिनों यह कपड़े और कागज पर किया जाता है। अपने लिए कोई एक चयन करें।

हम प्राकृतिक रंगों का उपयोग नहीं करेंगे जैसा कि प्राचीन मिथिला चित्रकला में किया जाता था। लेकिन सिंथेटिक रंग जैसे पोस्टर रंग, तेल रंग या एक्रिलिक रंग का प्रयोग करेंगे।

अब विषय का चयन करें, जैसे पौराणिक कथा या दिन-प्रतिदिन के जीवन का चित्रण।

टिप्पणियाँ

प्रायोगिक अभ्यास 1

विद्यार्थियों, अभी हमने मधुबनीा चित्रकला की पारम्परिक विधियां सीखीं। अब हम मधुबनी चित्र का एक उदाहरण देखेंगे जिसका विषय है राम-सीता विवाह।

चरण 1: बॉर्डर

बॉर्डर मधुबनी चित्रकला का महत्वपूर्ण पहलू है और यह चित्र को पूरा करता है। निरंतर ज्यामितीय डिजाइन या प्रकृति प्रेरित रूप का उपयोग किया जा सकता है। सीमा 1/2 इंच से 2 इंच चौड़ी हो सकती है। जितना बड़ा कैनवास उतना ही बड़ा बॉर्डर होगा। यहाँ हम 1/2 इंच का बॉर्डर खीचेंगे।

चित्र 1.2

चरण 2: लेआउट

पेटिंग के लेआउट की संकल्पना करें। पहले मुख्य चरित्र को स्केच करें। यहाँ हम राम और सीता के विवाह का चित्रांकन कर रहे हैं। इसलिए सर्वप्रथम हम राम और सीता को रेखांकित करेंगे।

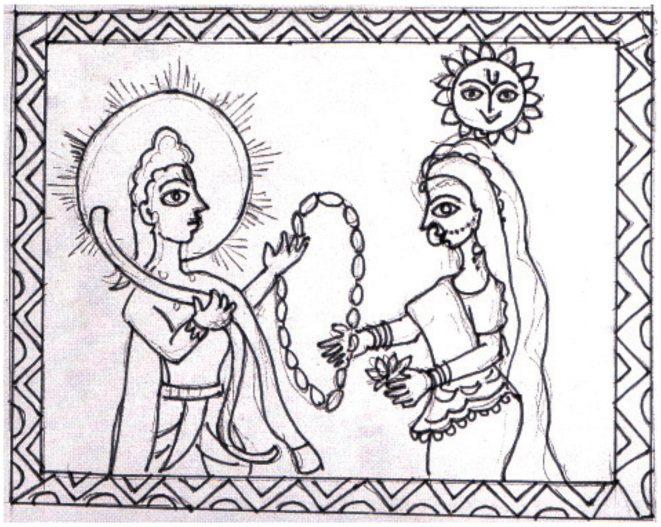

चित्र 1.3

चरण 3: पैटर्न्स

इस बात का ध्यान रखें कि मिथिला पेटिंग में मुख्य विषय के चारों ओर कोई जगह नहीं छोड़ी जाती है। खाली स्थान को प्रतीक चिन्हों से भरें। यहाँ हम सूरज, तोता, मछली, कलश और पुष्पों का प्रयोग करेंगे। सूरज का मधुबनी में प्रमुख स्थान है।

चित्र 1.4

चरण 4: रंग भरना

अन्तिम चरण में हम रंग भरेंगे, पहले बॉर्डर को दो अलग-अलग रंगों से भरेंगे फिर मुख्य पात्र यानी राम और सीता के कपड़े, बाद में फूल, मछली, मोर, सूर्य सबमें चित्र के अनुसार रंग भरेंगे। आप अलग रंग भी कर सकते हैं, लेकिन चटकीले रंगों का प्रयोग ठीक है। पत्तियों को हरे, मोर को नीले रंग से रंगे आदि।

चित्र 1.5

प्रायोगिक अभ्यास 2

अब हम दूसरा मधुबनी चित्र बनायेंगे जिसका विषय मछली और मोर है।

चरण 1: बॉर्डर

बॉर्डर मधुबनी चित्रकला का महत्वपूर्ण पहलू है और यह चित्र को पूरा करता है। ज्यामितीय डिजाइन या प्रकृति प्रेरित रूप का उपयोग किया जा सकता है। सीमा 1/2 इंच से 2 इंच चौड़ी हो सकती है। जितना बड़ा कैनवास, उतना ही बड़ा बॉर्डर होगा। यहाँ हम 1/2 इंच का बॉर्डर खीचेंगे।

सबसे पहले फ्री हैंड से समान आकार के अर्ध मंडल बनाएं और इस अर्धमंडल में डबल लाइन्स जोड़े। इसी तरह का पैटर्न अंदर की बाउंड्री के लिए खींचे। डबल लाइन के साथ गोला जोड़ें। अंतत: रेखा और सर्किल के बीच की जगह भर दें।

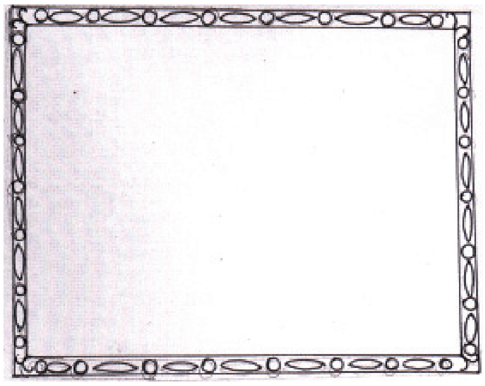

चित्र 1.6

चरण 2: लेआउट

पेटिंग के लेआउट की संकल्पना करें। पहले मुख्य चरित्र को स्केच करें। इसमें मोर और मछली को बनायें। इसके बाद शेष स्थान को सारे पैटर्न से भरें। सारे पैटर्न को मुख्य विषय का समर्थन करना चाहिए इसलिए मोर के आसपास मोर पंख बनाए और मछली के पास पानी की लहरों के अर्द्ध चन्द्राकार गोल बनायें।

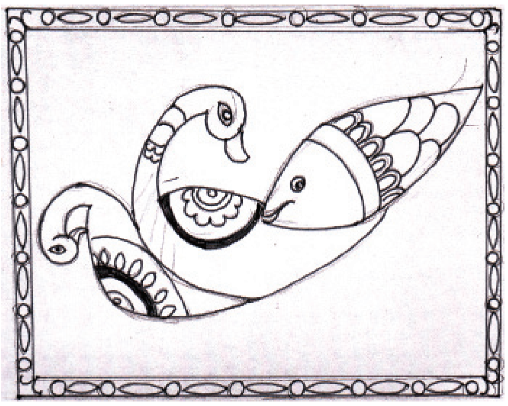

चित्र 1.7

चरण 3: पैटर्न

विवरण के लिए पैटर्न्स को दोहराएँ। इसका कोई निश्चित नियम नहीं है। आप कोई भी पैटर्न का प्रयोग कर सकते हैं। यह पैटर्न प्रमुख विषय के साथ अच्छी तरह से मिश्रित होना चाहिए। बॉर्डर में भी विवरण के लिये पैटर्न का प्रयोग किया जा सकता है।

चित्र 1.8

चरण 4: रंग भरना

इस बात का ध्यान रखें कि मिथिला पेटिंग में मुख्य विषय के चारों ओर कोई जगह खाली नहीं छोड़ी जाती है। जैसे नीचे दिए गए चित्र में किया गया है, काले रंग का प्रयोग करके चित्र को पूरा करें।

चित्र 1.9

टिप्पणियाँ

प्रायोगिक अभ्यास 3

एक और मधुबनी चित्र बनाते हैं। चित्र का विषय कोहबर है।

चरण 1

मधुबनी चित्रकला में कोहबर का चित्रण प्रमुख विषय है। यह कोहबर घर की दीवार पर बनाया जाता है। इस चित्र को बनाने के लिए जमीन पर बड़ा आयत बनाएँ। इस आयत में चारों तरफ बॉर्डर या हाशिया बनाए। यह 1/2 इंच से लेकर 2 इंच तक हो सकता है। इस हाशिये में हम तिरछी रेखाओं से त्रिभुज के समान आकृति का ज्यामितीय आलेखन बनायेंगें।

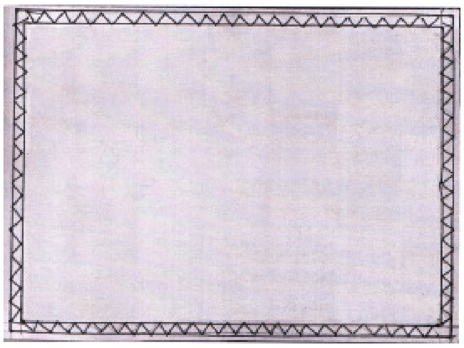

चित्र 1.10

चरण 2

अब हम मुख्य चित्रभूमि पर केन्द्र में बन देवी बनाएं। इस देवी के मध्य भाग में एक अलंकृत वृत्त बना देंगे जिसमें एक फूल की आकृति होगी। दोनों हाथों की जगह हम बड़ी-बड़ी पत्तियां बनाएँगे। ऊपर नीचे चारो तरफ गोल फल बनाएँगें। इस वृक्ष का तना हम लहगें की तरह अलंकृत करेंगे। यह वन देवी समृद्धि की देवी समान है। इस आयत में हम अन्य आकृतियां जैसे सबसे ऊपर नवविवाहित वर बधू को बनाएँगें। नीचे की तरफ दो महिला आकृतियों के बीच में एक झांकी को चित्रित करेंगे। बाईं तरफ दो मोर और दाहिनी तरफ एक बैठी हुई महिला को बनाएँगें।

चित्र 1.11

चरण 3

कोहबर चित्रण में खाली स्थान नहीं छोड़ते हैं। इसलिए हम मछली, तोते, नाग नागिन, कछुआ, फल, फूल, पत्तियां तथा वृक्ष की टहनियों को चित्रित करेंगे। घड़े तथा टोकरियों को भी चित्रित करेंगे, जो खुशी एवं समृद्धि के प्रतीक हैं।

चित्र 1.12

चरण 4

इस चित्र को हम गेरूए रंग से सफेद धरातल पर बनाएंगे।

चित्र 1.13

आपने क्या सीखा

मधुबनी कला

- दोहरी बाहरी सीमा
- ज्यामितीय आकृतियां
- प्राकृतिक रंगों का प्रयोग
- प्रसिद्ध चित्रकार : सीता देवी गंगा देवी इत्यादि
- उत्पत्ति और विस्तार बिहार के मिथिला जिले में

पाठांत प्रश्न

1. भगवान श्रीराम द्वारा स्वर्ण हिरण का शिकार करते हुए रेखांकन कीजिए।
2. भगवान शिव की पूजा करती हुई महिला का मधुबनी चित्रांकन कीजिए।
3. प्राकृतिक मोटिफ मछली और कमल को मधुबनी स्टाइल में रेखांकित कीजिए।
4. ग्रामीण महिला जिसके सर पर पानी भरा घड़ा हो, उसको रेखांकित कीजिए।
5. मधुबनी कला की उत्पत्ति किस जगह से हुई?
6. मधुबनी कला की दो प्रमुख शैलियों के अलग-अलग चित्र बनाएं।
7. मधुबनी कला की कोई तीन विशेषताएं लिखिए।
8. मधुबनी कला में प्रयोग होने वाले कोई तीन मोटिफ को चित्रित करें।
9. मधुबनी कला में पदमश्री सर्वप्रथम किसको मिला? उनके चित्रों की प्रतिमूर्ति बनाएँ।

शब्दकोश

उपरान्त : पश्चात, बाद

उत्पत्ति : किसी कार्य या वस्तु के आरंभ होने या करने का समय

प्रयुक्त : जिसे प्रयोग या व्यवहार में लाया गया हो

अभिप्राय : तात्पर्य, आशय, मोटिफ

सूचीबद्ध : व्यक्तियों, वस्तुओं आदि को किसी विशेष उद्देश्य से तालिकाबद्ध करना

अनिवार्य :	जिसके बिना काम न चल सके
गतिविधि :	रहने-सहने का ढंग, आचरण, चाल-ढाल, क्रिया-कलाप
प्रतीकात्मक :	जो प्रतीक या प्रतीकों से संबद्ध हो
व्यापक :	चारों ओर फैला हुआ; छाया हुआ
तदनुसार :	उसी प्रकार से
परिदृश्य :	प्राकृतिक दृश्यों का प्रतिनिधित्व करने वाली एक तस्वीर
पारंपरिक :	परंपरा संबंधी
पृष्ठभूमि :	एक तस्वीर, दृश्य या डिजाइन का हिस्सा जो मुख्य आंकड़ों या वस्तुओं के लिए एक आधार बनाता है
ज्यामितीय :	गुणों और बिंदुओं, रेखाओं, सतहों, ठोस और उच्च आयामी एनालॉग के संबंधों से संबंधित गणित की शाखा।